UNIT – II (1)

Q. शिक्षा तथा दर्शनशास्त्र के साथ सम्बंध का वर्णन कीजिए :-

Ans. शिक्षा – दर्शन :→ दर्शन और शिक्षा का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इन दोनों के घनिष्ठ सम्बन्धों के कारण 'शिक्षा दर्शन' में एक नये विषय का विकास हुआ। दर्शन मानव-जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है जबकि शिक्षा लक्ष्य की प्राप्ति करने पर बल देती है। इस प्रकार दार्शनिक अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा का सहारा लेते हैं ठीक उसी प्रकार शिक्षा शास्त्री दर्शन का सहारा लेते हैं। शिक्षा-दर्शन एक ऐसा विषय है जो दर्शन के दृष्टिकोण से शिक्षा के समस्त कार्यों, क्रियाओं, समस्याओं आदि का अध्ययन करता है। दर्शन तथा शिक्षा की अलग-2 व्याख्या करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों का लक्ष्य व्यक्ति को सत्य का का ज्ञान कराना तथा उसके जीवन की को विकसित करना है।

परिभाषा :→

* जे० एस० रास के अनुसार :→ " दर्शन तथा शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जो एक ही वस्तु के विभिन्न दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। वे एक दूसरे पर अंतर्निहित हैं।

* हैन्डरसन के अनुसार – " शिक्षा की समस्याओं के अध्ययन में दर्शन का प्रयोग है।"

* जॉन डीवी के अनुसार :"

"शिक्षा – दर्शन सामान्य दर्शन का कमजोर सम्बन्धी नहीं, यद्यपि दार्शनिकों ने भी इसको ऐसा ही माना है, अन्तिम रूप में यह दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है क्योंकि शिक्षा की प्रक्रिया से

ही ज्ञान प्राप्त होता है"

शिक्षा का अर्थ :→ शिक्षा अंग्रेजी शब्द 'एजुकेशन' का हिन्दी रूपान्तर है। जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द 'एजुकेटम' से हुई है जिसका अर्थ है 'शिक्षण की कला' इसी के समानान्तर एक और शब्द है 'एडुकेयर' जिसका अर्थ है- शिक्षित करना, पालन पोषण करना नेतृत्व प्रदान करना। ये सभी अर्थ शिक्षा की क्रिया एवं प्रक्रिया की ओर संकेत करते हैं।

परिभाषाएं :→

* फ्रोबेल के अनुसार " शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसकी सहायता से बालक अपने आन्तरिक गुणों को अभिव्यक्त करता है।"

* महात्मा गाँधी " शिक्षा से उन सर्वांगीण गुणों को विकसित करना [illegible] है जो बालक एवं मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में विद्यमान होते हैं।

* जान डीवी के अनुसार " शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह अपने वातावरण पर नियंत्रण करने की क्षमता प्राप्त करता है तथा अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करता है"

* दर्शन का अर्थ :→ 'दर्शन' शब्द 'दृश' धातु से बना है जिसका अर्थ है "देखना' अर्थात जिसके द्वारा सत्य के दर्शन किए जाए।

दर्शन अंग्रेजी भाषा के 'फिलोस्फी' (Philosof शब्द का रूपांतर है इस शब्द की उत्पत्ति ग्रीक के दो शब्दों 'फिलोस' (philos) तथा सोफिया (sophia) से हुई है फिलोस का अर्थ है प्रेम तथा अनुराग सोफिया का अर्थ है ज्ञान

Scanned with CamScanner

(3)

इस प्रकार 'फिलोसफी' अर्थात दर्शन का शाब्दिक अर्थ ज्ञान का अनुराग अथवा ज्ञान का प्रेम है। अथवा ज्ञान की खोज करना। इस दृष्टि से ज्ञान तथा सत्य की खोज करना उसके वास्तविकता स्वरूप को समझने की कला को दर्शन कहते हैं किसी कार्य करने से पूर्व इस कला का प्रयोग करने वाले व्यक्ति को दार्शनिक की संज्ञा दी जाती है।

जो व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करने तथा नई-2 बातों को जानने के लिए सारे प्रकार करता है तथा जो कभी संतुष्ट नहीं होता, उसे दार्शनिक कहा जाता है।

परिभाषाएं :→

* फिक्टे " दर्शन ज्ञान का विज्ञान है।"

* अरस्तु " दर्शन एक ऐसा विज्ञान है जो परम तत्व के यथार्थ स्वरूप की जाँच करता है।"

* बिलपेट्रिक "दर्शन का अर्थ सामान्य रूप से जीवन सम्बन्धी विचारों, सिद्धान्तों एवं सांसारिक दृष्टिकोण से है।"

* दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव :- दर्शन का शिक्षा के विभिन्न अंगों से संबंध

1. दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य :→ शिक्षा का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है।

शिक्षा के उद्देश्य का निर्माण जीवन के उद्देश्य अथवा जीवन के दर्शन के अनुसार किया जाता है जीवन के उद्देश्य को निर्धारित करना दार्शनिक है वही शिक्षा का उद्देश्य बन जाता है बन जाता है। अतः भिन्न भिन्न दार्शनिक अपनी-2 विचारधाराओं अथवा देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए समय-2 पर जीवन के उद्देश्यों तथा लक्ष्यों को निर्धारित करते रहते हैं जैसे-2 जीवन के उद्देश्यों में परिवर्तन

Page No.:
Date:

होता जाता है उसी प्रकार शिक्षा के उद्देश्य भी बदले जाते हैं।

शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य

1. शिक्षा द्वारा अधिक से अधिक ज्ञान की प्राप्ति करना
2. शिक्षा द्वारा भारत में इस्लाम धर्म का प्रचार करना
3. भारतीय मुसलमानों को इस्लाम धर्म के प्रति अपार श्रद्धा पैदा करना।

* दर्शन तथा पाठ्यक्रम :→ पाठ्यक्रम के द्वारा किसी अमुक तथा सामान्य एवं सन्तुलित विचारधारा के अनुसार जीवन के लक्ष्य प्राप्त करने के लिए लोगों की विचार को परिवर्तित किया जाता है। अतः शिक्षा के उद्देश्य की भाँति पाठ्यक्रम का निर्माण भी दर्शन के अनुसार ही होता है। जिस देश में जिस समय जैसी विचारधाराएं आकांक्षाएं तथा मान्यताएं एवं आदर्श प्रचलित होते हैं उन्हीं के अनुसार उस देश की पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है।

* दर्शन एवं शिक्षा पद्धतियाँ :- दर्शन तथा शिक्षा पद्धतियों में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है यही कारण है कि समय-२ पर बदलती हुई दार्शनिक विचारधाराओं के अनुसार शिक्षा-पद्धतियों में भी परिवर्तन होता रहता है। वास्तविकता यह है कि किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए जिस प्रणाली अथवा शिक्षा-पद्धति का प्रयोग किया जाता है वह दर्शन से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। ऐसी दशा में शिक्षा पद्धति एक ऐसी व्यावहारिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीवन के लक्ष्य तथा शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार के प्रश्नों के सम्बन्ध में भिन्न दार्शनिकों के अलग-२ मत हैं। अतः प्रत्येक दार्शनिक विचारधारा के अनुसार शिक्षण की पद्धतियां अलग-२ ही हैं।

Scanned with CamScanner

(5)

दर्शन और अनुशासन :→ अनुशासन पर दार्शनिक विचार धाराओं का गहरा प्रभाव पड़ता है वस्तुस्थिति यह है कि स्कूल अनुशासन नियन्त्रण पर आधारित होना चाहिए अथवा पूर्ण स्वतन्त्रता पर, यह एक दार्शनिक समस्या है। यदि हम किसी देश तथा काल की सामाजिक दार्शनिक तथा राजनीतिक विचारधाराओं और स्कूल के अनुशासन का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि स्कूल का अनुशासन उस समय की विचारधाराओं के अनुरूप है एडम्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मार्डन डेवलपमेंट्स इन एजुकेशनल प्रैक्टिस" में अनुशासन के तीन रूपों का वर्णन किया है

1 दमनात्मक अनुशासन :→ दमनात्मक अनुशासन आदर्शवादी विचारधारा पर आधारित है इस अनुशासन में बच्चों को किसी प्रकार भी स्वतन्त्रता नहीं दी जाती वरन् उन्हें बलपूर्वक नियंत्रण में रखे जाने पर बल दिया जाता है यह अनुशासन मारपीट तथा भय पर आधारित है

2 प्रभावात्मक अनुशासन :→ यह अनुशासन आदर्शवादी दर्शन पर आधारित है। शिक्षक को चाहिए कि वह अपने व्यक्तित्व तथा आदर्शों के द्वारा बालक को इस प्रकार से प्रभावित करे कि आत्म-अनुशासन विकसित हो जाए।

3 मुक्त्यात्मक अनुशासन :→ इस दर्शन के अनुसार बालकों की स्वाभाविक अच्छाई में विश्वास किया जाता है मुक्तवादियों का विश्वास है कि यदि बालक को उसके विकास के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान कर दी जाये, तो उसके जीवन में नैतिकता की सुन्दरता उत्पन्न होगी। इसलिए शिक्षा में अनुशासन तथा स्वतन्त्रता की चर्चा प्रत्येक स्थान पर सुनाई पड़ती है

(6)

Page No.:
Date:

* **दर्शन तथा पाठ्य पुस्तक** :- जीवन के आदर्शों तथा शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पाठ्य-पुस्तक एक महत्वपूर्ण स्थान है पाठ्य-पुस्तक को देश की प्रचलित दार्शनिक विचारधाराओं, सिद्धान्तों, आदर्शों तथा भावनाओं को ध्यान में रखते हुए लिखा जाता है। जिसके अध्ययन से बालकों के जीवन में आदर्शों प्राप्त करने की उत्सुकता बढ़े।

* **दर्शन तथा अध्यापक** :- प्रत्येक अध्यापक एक प्रकार से दार्शनिक है। शिक्षण की सफलता शिक्षक की योग्यता पर निर्भर करती है। प्रत्येक शिक्षक के अपने निश्चित विचार, सिद्धान्त मान्यताएं और आदर्श होते हैं। शिक्षण की विधि समस्याएं, शिक्षार्थी, शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण अनुशासन आदि पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

* **दर्शन और मूल्यांकन** :- जिस प्रकार दर्शन ने शिक्षा के उद्देश्यों पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, अनुशासन आदि को प्रभावित किया है उसी प्रकार शिक्षा के अन्य महत्वपूर्ण मापने को भी प्रभावित किया है।

1. दर्शन जीवन के वास्तविक लक्ष्य को निर्धारित करता है।
2. दर्शन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को निर्धारित करता है।
3. शिक्षा - दर्शन का गत्यात्मक रूप है।
   (1) सिद्धान्त स्थापित करना
   (2) उन सिद्धान्तों को व्यवहार में लाना
4. महान दार्शनिक महान शिक्षाशास्त्री हुए हैं।
5. दर्शन का ज्ञान शिक्षा द्वारा

Scanned with CamScanner

~~शिक्षा~~

शिक्षा का दर्शन पर प्रभाव

↓

शिक्षा - दर्शन को जिन्दा रखती है

↓

शिक्षा - दर्शन को गतिशील बनाती है

↓

शिक्षा दर्शन के विकास में मदद करती है

↓

शिक्षा दर्शन को जन्म देती है

↓

शिक्षा दर्शन नागरिकों में शारीरिक शक्ति को उत्पन्न करती है

↓

नागरिकों में देश प्रेम की भावना उत्पन्न करना।

निष्कर्ष :- शिक्षा दर्शन एक दूसरे पर आश्रित है दोनों में घनिष्ठ संबंध है रॉस का कथन है कि शिक्षा एवं दर्शन एक ही सिक्के के दो पहलू है एक दूसरे से पृथक नहीं, अपितु एक से दूसरा निहित है।

Unit – II

Q2. शैक्षिक समाजशास्त्र क्या है? शैक्षिक समाजशास्त्र का शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ता है?

Ans शैक्षिक समाजशास्त्र। →

वह विज्ञान है जो शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली प्रक्रियाओं, जन समूहों, संस्थाओं तथा समितियों का अध्ययन करता है। समाजशास्त्री मुख्य रूप से शिक्षा पर सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव, शिक्षा की प्रकृति और सामाजिक परिवर्तनों में शिक्षा की भूमिका आदि पर प्रकाश डालते हैं।

शैक्षिक समाजशास्त्र का अर्थ: →

समाजशास्त्र की वह शाखा है जो शिक्षा और समाजशास्त्र का समन्वित रूप है। समाजशास्त्र के उद्देश्यों को शैक्षिक प्रक्रिया के द्वारा प्राप्त किये जाते हैं। शैक्षिक समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली प्रक्रियाओं, सामाजिक विकास तथा उन्नति के लिए उपयोगी है।

परिभाषाएँ। → जार्ज पेनी को शैक्षिक समाज शास्त्र का पिता कहा है उन्होंने अपनी पुस्तक 'दि प्रिन्सिपल्स ऑफ एजुकेशनल सोशियोलाजी' में कहा है "शिक्षा का सामूहिक जीवन पर तथा सामूहिक जीवन का शिक्षा पर प्रभाव है।" उन्होंने बताया कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर पड़ने वाली सामाजिक शक्तियों के प्रभाव का अध्ययन करना अति आवश्यक है।

जॉन डीवी " अपनी पुस्तक 'स्कूल' तथा समाज' एवं जनतन्त्र और शिक्षा' में शैक्षिक समाजशास्त्र के महत्व को स्वीकार करते हुए शिक्षा को सामाजिक प्रक्रिया माना है।

(2)

औटवे :- "शैक्षिक समाजशास्त्र का प्रारम्भ शिक्षा की एक प्रक्रिया है जो समाज में होती रहती है। उसका उद्देश्य और विधि उस समाज की प्रकृति पर निर्भर करती है।"

शैक्षिक समाजशास्त्र का क्षेत्र या विषय वस्तु

1. सामाजिक क्रियाओं को शिक्षा कार्यक्रम की ओर प्रवाहित करना।
2. शिक्षक एवं छात्रों का परस्पर संबंध
3. समाज में शिक्षक की स्थिति
4. सामाजिक आवश्यकताएं एव समस्याए
5. विभिन्न सामाजिक इकाइयों के परस्पर सम्बन्ध
6. बालक एवं विद्यालय पर सामाजिक जीवन का प्रभाव
7. सामाजिक प्रक्रिया में रेडियो, सिनेमा एवं प्रेस का मुल्यांकन
8. व्यक्ति एवं समाज की प्रगति हेतु पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन
9. सामाजिक नियंत्रण एव सामाजिक प्रगति के साधनों का मुल्यांकन।

उद्देश्य

1. सामाजिक प्रगति के लिए शिक्षक एवं स्कूल के कार्यो का सामाजिक सन्दर्भ में ज्ञान प्राप्त करना।
2. विद्यालय को प्रभावित करने वाले सामाजिक तत्व का अध्ययन
3. छात्रों पर पड़ने वाले सामाजिक तत्वों का ज्ञान
4. जनतांत्रिक विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त करना।
5. शैक्षिक समाजशास्त्र के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विभिन्न अनुसंधान विधियों का प्रयोग करना।

Scanned with CamScanner

(3)

Page No.:
Date:

7. सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रश्नों को ध्यान में रखकर सामाजिक दृष्टि से शैक्षिक पाठ्यक्रम का निर्माण करना।

शिक्षा पर प्रभाव

1. शैक्षिक समाजशास्त्र और शिक्षा। → शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। इस दृष्टि से इसके द्वारा विभिन्न सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक प्रभाव बाह्य प्रभाव है परन्तु शिक्षा पर आन्तरिक प्रभाव पड़ता है।

2. शैक्षिक समाजशास्त्र और शिक्षा के उद्देश्य। → शिक्षा का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना जो जनतांत्रिक जीवन के अनुकूल बन सके, अर्थात वे समाज में अपने आप को सन्तुलित एवं समायोजित कर सकें। शिक्षा का उद्देश्य है वह व्यक्तियों को ऐसी क्षमता प्रदान करे कि वह अपनी उन्नति के साथ-2 अपने समाज का उत्थान कर सके।

3. शैक्षिक समाजशास्त्र और पाठ्यक्रम। → पाठ्यक्रम में ऐसी क्षमता होनी चाहिए। कि वह प्रगतिशील समाज के लिए उच्चतम मूल्यों व आदर्शों को वहन कर सके। उसके लिए कुछ ऐसे आदर्श प्रतिस्थापित समाज की मर्यादा बनी रहती है आने वाली पीढ़ी को भी हस्तांतरित होने चाहिए यह कार्य एक अच्छे समाजशास्त्रीय पाठ्यक्रम के द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है।

Scanned with CamScanner

५ शिक्षण विधियाँ ! - शिक्षण विधि ऐसी होनी चाहिए। जिसमें व्यक्तिगत प्रतियोगिता की भावना के स्थान पर सामूहिक प्रतियोगिता की भावना हो एक समूह दूसरे से बढ़कर अच्छा कार्य करने का संकल्प करे। सामूहिक विचार-विनिमय, व्याख्यानमाला, सेमीनार आदि विधियाँ अधिक उपयोगी है।

६ अध्यापक ! → किसी का भाग्य उसके विद्यार्थी में सीमित होता है। शिक्षा के समाजशास्त्री आरम्भ से ही स्वतन्त्र शासन मानते है समाजशास्त्र का सैद्धान्तिक पक्ष ही प्रधान है।

शिक्षा के कार्य

↓

नवीन सामाजिकता का विकास

↓

संस्कृति का आत्मसात

↓

क्रियात्मक और रचनात्मक कार्य

↓

समाज में शिक्षक की स्थिति

↓

शिक्षक और छात्रों का गहरा प्रबन्ध

Scanned with CamScanner

शिक्षा के महत्व

1. शिक्षा के उद्देश्य समाज की जरूरतों के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं।
2. शिक्षा की प्रक्रिया के विभिन्न अंग निरंतर ही समाज के स्वरूप से प्रभावित होते रहते हैं।
3. शिक्षा की प्रक्रिया पर खर्च होने वाला समाज से ही आता है।
4. शिक्षा प्रक्रिया के तीनों अंग, शिक्षार्थी, शिक्षक तथा पाठ्यक्रम, समाज का ही अंग हैं।
5. शिक्षण की सामग्री का निर्माण तथा शिक्षण पद्धतियाँ समाज के स्वरूप पर ही निर्भर है।
6. शिक्षा के स्वरूप में आनेवाले परिवर्तन भी समाज की बदलती जरूरतों पर निर्भर करते हैं।
7. शिक्षा की प्रक्रिया जहाँ एक और वर्तमान की स्थितियों से तथा भावी स्वरूप से प्रभावित होती हैं या बदलती है वहीं उस समाज की संस्कृति से निर्धारित भी होती है।

निष्कर्ष - उपरोक्त कथन के अनुसार शिक्षा और शैक्षिक समाजशास्त्र गहरा संबंध है। समाज में अनेक ऐसे कारक हैं जो शिक्षा को प्रभावित करते हैं जैसे हमारे देश में भिन्न-भिन्न धर्म या सम्प्रदाय, जातियाँ-उपजातियाँ, धनी और निर्धन वर्ग इत्यादि के कारण शिक्षा में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं, इन समस्याओं को दूर करने में शिक्षक में सहानुभूति होनी चाहिए तभी वह सभी के साथ न्याय कर सकेगा। और अपने कर्तव्य का पालन।

Scanned with CamScanner

UNIT-2 (1)

Q. मानव संसाधन विकास में शिक्षा की भूमिका की विवेचना करो।

Ans प्रत्येक राष्ट्र अपने विभिन्न पक्षों का विकास करना चाहता है एक विकसित राष्ट्र बनना उसका सपना होता है जिसे साकार करने के लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील रहता है मानव संसाधन विकास स्वास्थ्य और रोजगार नीतियों के साथ प्रशिक्षण और शिक्षा एक संयोजन है, जो व्यक्ति विशेष, संगठन तथा राष्ट्र की साधन सम्पन्नता में लगातार सुधार तथा विकास सुनिश्चित करता है।

मानव संसाधन विकास का अर्थ :→ मानव संसाधन का उद्देश्य मानवीय श्रम का सदुपयोग करना है जिसमें जन शक्ति विकास भी शामिल है। जनशक्ति का अर्थ सभी प्रकार के संगठित और असंगठित श्रमिक, नियोक्ता और पर्यवेक्षक प्रबन्धक एवं कर्मचारी से है। यह शब्द श्रम के बहुत निकट है सभी व्यक्ति जो कार्य पर लगे हुए हैं या कार्य करने योग्य हैं किन्तु अभी कार्यरत नहीं हैं, मानव संसाधन कहलाते हैं। मुख्यतीन सहायक संसाधन

1. भौतिक संसाधन :→ ये वे संसाधन हैं जो प्रकृति प्रदत होते हैं जैसे नदियाँ, पर्वत, जल, कोयला तथा लोहा आदि। किसी भी राष्ट्र के विकास में इन संसाधनों की मुख्य भूमिका होती है

2 आर्थिक संसाधन :→ किसी भी कार्य को करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। यह वित्तीय संसाधन है। किसी राष्ट्र के पास जितने अधिक वित्तीय संसाधन होते हैं उसके विकास में उतना ही अधिक सम्भावनाएँ होती हैं

Scanned with CamScanner

3 मानवीय संसाधन :→ मानवीय संसाधनों का महत्व सबसे अधिक है। क्योंकि वित्तीय व भौतिक संसाधनों का उपयोग करने वाला तो मनुष्य ही है। यदि उसमें आवश्यक कौशल है तथा वह अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है तभी अन्य दोनों प्रकार के संसाधनों का समुचित लाभ उठाया जा सकता है।

मानव संसाधन विकास एक नवीन अवधारणा है जिसका प्रयोग व्यष्टि एवं समष्टि दो स्तरों पर किया जाता है प्रथम स्तर पर इसका प्रयोग एक संगठन में कार्मिकों एवं प्रबन्धकों के विकास के लिए। जिससे गुणवत्ता तथा उत्पादन दोनों में वृद्धि हो। द्वितीय स्तर पर इसका विकास एक राष्ट्र की सम्पूर्ण जनसंख्या का बहुमुखी विकास करना।

मानव संसाधन के महत्व

1. कार्मिकों को संगठन एवं कार्य के लिए अनुपयुक्त एवं अवांछित होने से बचाता है।
2. कार्मिकों में रचनात्मक योग्यता एवं प्रतिभा विकसित करना।
3. कार्मिकों को उच्च स्तर के कार्यों के लिए तैयार करना।
4. सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन में सहायता प्रदान करना।
5. उच्च पदों के लिए कार्मिकों में दक्षता विकसित करना।
6. नव युक्त कार्मिकों में मानव संसाधन विकास की मूलभूत प्रतिभा एवं ज्ञान प्रदान करना।
7. यह कार्मिकों की अपनी कमियों एवं शक्तियों को पहचानने में सहायक होता है। जिससे कार्मिक एवं संगठन दोनों के निष्पादन में सुधार होता है।

Scanned with CamScanner

(3)

8 व्यक्तिगत एवं सामूहिक मनोबल में विकास कार्यों तथा उत्तरदायित्व की भावना एव उनकी पारस्परिक संबंध स्थापित करना।

9 यह कार्मिकों के एकीकृत विकास में सहायक है

10. मानव संसाधन विकास के लिए विस्तृत योजना तैयार करना

11 संगठन की क्षमताओं में वृद्धि।

12. व्यक्तिगत एवं संगठनात्मक उद्देश्यों के लिए एक पर्यावरण का निर्माण करना जिससे कार्मिक अपनी प्रतिभा की पहचान सके और उसे योग्य बन सके।

13 उच्च अधिकारियों द्वारा अधीनस्थ कर्मचारियों को सूचना एवं मार्गदर्शन पर जोर देता है ताकि उनके कार्य में सुधार हो सके

14 संगठन के सही एवं प्रभावी कार्य के लिए आश्वासन देना

15 मानव संसाधन विकास कार्मिक एवं संगठन के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है

आवश्यकता

↓

उत्पादन मानवीय संसाधनों पर निर्भर

↓

प्राकृतिक व आर्थिक संसाधनों के सही उपयोग में सहायक

↓

सामाजिक विकास में सहायक

↓

पूंजी निर्माण में सहायक

(16)

राष्ट्रीय विकास के लिए मानव संसाधन विकास आवश्यक है

मानव संसाधनों के विकास में शिक्षा की भूमिका

1 अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास :→ प्रत्येक बच्चे में जन्म से ही कुछ विशेष योग्यताएं होती हैं शिक्षा ही उनकी क्षमताओं का विकास करती है जॉन → पैस्टोलॉजी :→ "शिक्षा व्यक्ति की जन्मजात क्षमताओं का स्वाभाविक विरोधहीन व प्रगतिशील विकास है"

2 मानव संसाधन विकास के लिए व्यक्ति के व्यक्तित्व के शारीरिक, मानसिक, भावात्मक तथा सामाजिक आदि विभिन्न पक्षों का विकास होना आवश्यक है

3 विभिन्न कौशलों का विकास – यदि उद्योग, व्यवसाय कृषि, प्रबन्धन अथवा किसी अन्य क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति में उन कार्यों को करने का विशिष्ट कौशल हो तो वह उस क्षेत्र में अपना विशिष्ट योगदान दे सकता है

4 बौद्धिक शक्तियों का विकास :→ मानवीय संसाधन के विकास के लिए आवश्यक है कि उनमें बोध, चिन्तन, कल्पना व तर्क करने की शक्तियों का विकास किया जाए। इस प्रकार वे विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य कर समाज के विकास को नई दिशा प्रदान करेंगे।

5 मानव संसाधनों के विकास के लिए उन्हें विभिन्न विषयों का ज्ञान होना आवश्यक है ज्ञान ही मनुष्य को प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्रदान करती है

Scanned with CamScanner

(5)

6 शिक्षा व्यक्ति में उन योग्यताओं का विकास करती है जिनके माध्यम से वे अपने देश में उपलब्ध भौतिक संसाधनों का पूरा लाभ उठा सके।

7 व्यक्ति में कौशल होने के साथ-2 कार्य करने की इच्छा भी होनी चाहिए। शिक्षा ही वह साधन है जो व्यक्ति में कार्य करने की इच्छा पैदा करती है वह निरन्तर कार्य करते हुए दुनिया के विभिन्न देशों के विकास की ओर बढ़ता रहे।

8 व्यवहार में परिवर्तन लाना → व्यक्तियों का व्यवहार वैसा ही बन जाए जैसा समाज चाहता है अर्थात समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप सांचे में ढालना।

9 महिलाओं का विकास → महिलाएं समाज का मुख्य अंग है उनके विकास के बिना मानव संसाधनों के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस प्रकार समाज की महिलाओं को मानवीय संसाधनों के रूप में जागरूकता करने का कार्य शिक्षा ही करती है

10 पिछड़े वर्गों का विकास → समाज के पिछड़े व अल्पसंख्यक वर्गों के लोग भी मानवीय संसाधन है शिक्षा इन वर्गों के लोगों में जागरूकता, आत्मविश्वास तथा उन्हें अपनी शक्तियां को पहचानने में मदद करती है।

11 जहाँ भौतिक साधनों का विकास लक्ष्य प्राप्ति का साधन है वहाँ मानव संसाधन अपने आप में एक लक्ष्य है और बिना भौतिक साधनों का विकास सम्भव नहीं है।

भारत में मानव संसाधन विकास एवं शिक्षा

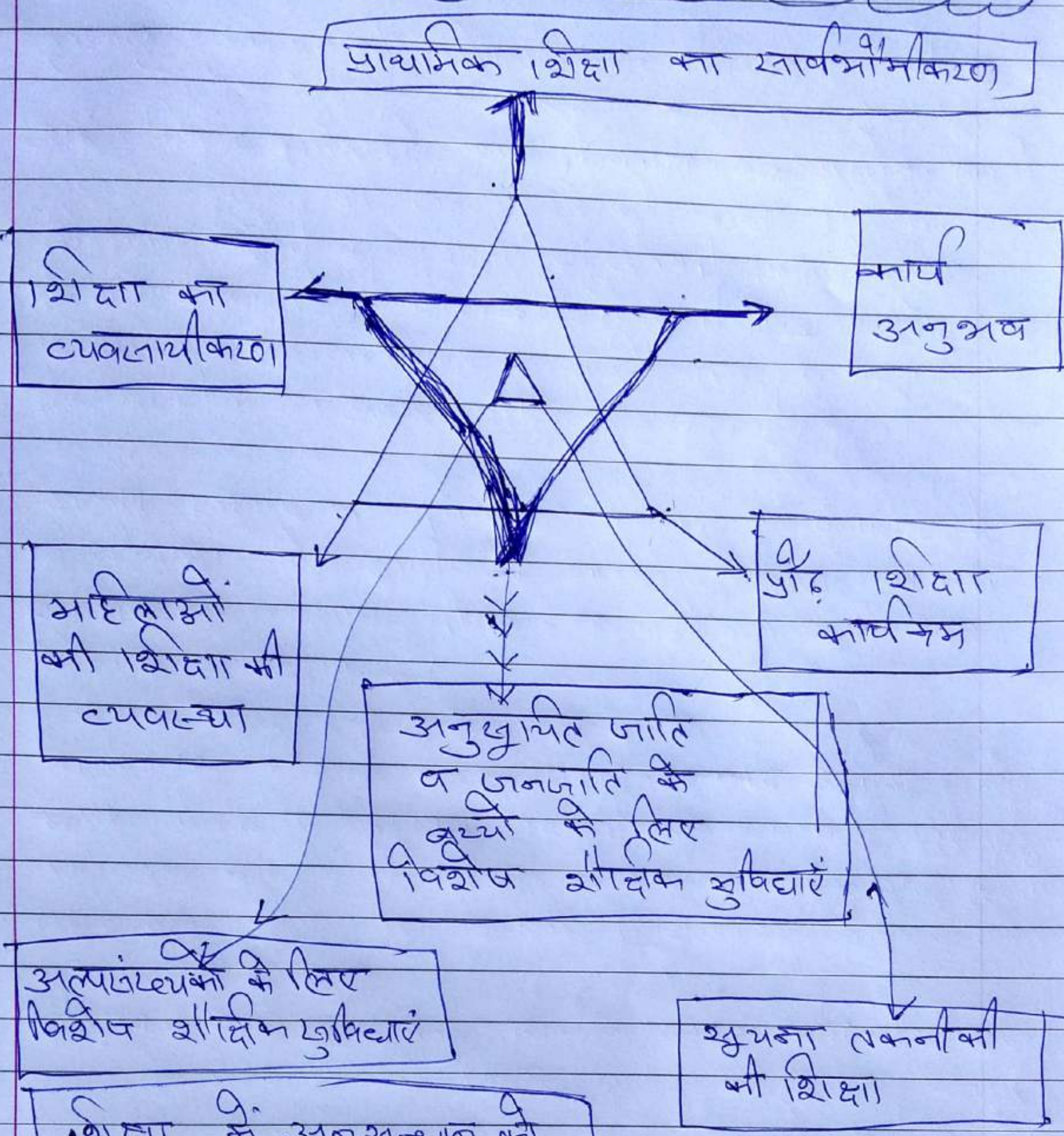

निष्कर्ष:→ अतः हम कह सकते हैं कि मानव-संसाधनों के विकास का एकमात्र साधन शिक्षा ही है। प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के लिए सभी स्तरों पर अच्छी-से-अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास करता है। भारतीय शिक्षा आयोग ने कहा है कि प्रत्येक विकासशील राष्ट्र के लिए मानव संसाधन विकास का होना आवश्यक है।

UNIT-2 (1)

Page No.:
Date:

Q. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा संशोधित राष्ट्रीय नीति 1992 ने विद्यालयों को किस प्रकार प्रभावित किया

Ans 1985 में शिक्षा की चुनौती नामक एक दस्तावेज तैयार किया गया भारत के विभिन्न वर्गों (बौद्धिक, सामाजिक राजनैतिक, व्यावसायिक, प्रशासनीय आदि) ने अपनी शिक्षा सम्बन्धी टिप्पणियों दी और 1986 में भारत शिक्षा सम्बन्धी... भारत ने नई शिक्षा नीति 1986' का प्रारूप तैयार किया

* यह भारत की ऐसी पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति है जिसके उसके कार्यान्वयन की पूरी योजना प्रस्तुत की गई, और साथ ही साथ पर्याप्त संसाधन भी जुटाए गए हैं

* शिक्षा के सारतत्व व उसकी भूमिका के बारे में नीति में कहा गया है कि शिक्षा सबके लिए आवश्यक है शिक्षा की सांस्कृतिक भूमिका है शिक्षा वर्तमान और भविष्य के लिए अपने आप में एक अद्वितीय निवेश है

* समानता के लिए शिक्षा :- महिलाओं, अनुसूचित जातियों व जनजातियों तथा वंचित समूह को समान अवसर उपलब्ध करवाना

* शिक्षकों की शिक्षा सही समय पर अपने कार्य करने चाहिए, कार्य प्रणाली, जिम्मेदारी, वेतन आदि सभी स्तरों पर गुणात्मक सुधार की आवश्यकता

* तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा को महत्व देना।

* राष्ट्रीय शिक्षा नीति — 1986
इसे 12 भागों में विभाजित किया गया।

(8)

→ शिक्षा भूमिका : शिक्षा में जो समस्या चल रही है उसको हम दूर कैसे करेंगे
शिक्षा में क्या - 2 परिवर्तन किया जाएगा

* राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली :→ किस प्रकार की शिक्षा हम अपने देश में लागू करेंगे जैसे 10+2+3 कोठारी आयोग ने कहा था परन्तु उसको लागू नहीं किया गया लेकिन तब संसाधनों की कमी थी परन्तु अब इस योजना को लागू कर दिया 10+2+3 पद्धति

* समानता के लिए शिक्षा
* विभिन्न स्तरों पर शिक्षा का पुनर्गठन
प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक, और उच्च तीनों भागों में बांट कर शिक्षा का कार्य शुरू कर दिया

* शिक्षा व्यवस्था को कारगर बनाना
* शैक्षिक विषय वस्तु को नया स्वरूप देना :- किस प्रकार का पाठ्यक्रम होना चाहिए और पाठ्यवस्तु किस प्रकार की हो जिससे हम शिक्षा को नया रूप दे सकते हैं

* उच्च शिक्षा :-
* तकनीकी व प्रबंध शिक्षा
* शिक्षक शिक्षा
* शिक्षा का प्रबंधन
* शिक्षा सम्बन्धी संसाधन
* समीक्षा

* नवोदय विद्यालय का निर्माण किया गया
निर्धन बच्चों हेतु 75% स्थान सुरक्षित रखना, अनुसूचित जाति 15%, अनुसूचित जनजाति 7.5 प्रतिशत स्थान सुरक्षित

Scanned with CamScanner

③

6 से 14 तक की शिक्षा
से संबंधित, प्रवेश हेतु परीक्षा
CBSE

* विद्यालय संकुल :- माध्यमिक विद्यालय स्थापित होकर एक समूह का निर्माण करते है।

* सर्व शिक्षा अभियान :-
नवंबर 2000 में भारत सरकार ने देश के सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा सुलभ कराने के उद्देश्य से सर्व शिक्षा अभियान शुरु ~~प्रारंभ~~ किया

* ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड :->
ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड एक केन्द्रीय प्रायोजित कार्यक्रम है जिसे 1986 में देश के सभी प्राथमिक विद्यालयों को न्यूनतम सुविधाएं प्रदान करने के लिए जारी किया गया था।
ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड का प्रारम्भ 1987 में हुआ।

* दूरस्थ एवं मुक्त विश्वविद्यालय
मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना शहर के दूरदराज की आबादी को उच्च शिक्षा के अधिक से अधिक अवसर देने तथा शिक्षा का सर्व सुलभ स्वरूप प्रदान करने के लिए की गई थी।

* कई संस्थाओं में छात्र उपाधि प्राप्त कर लेते है और उनको उनके अनुरूप नौकरी नहीं मिल पाती थी तो इस समस्या को निदान के लिए एक नया कदम उठाया गया

नई शिक्षा नीति 1992 कार्य योजना (Programme of Action)
* राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सुझावों के आधार पर एक कार्य योजना का निर्माण किया गया जिसके अन्तर्गत जो भी सुझाव दिए गए थे। उनका कार्यान्वयन प्रारम्भ किया गया।

(4)

Page No.:
Date:

* उक्त कार्य योजना को भारतीय संसद द्वारा अगस्त 1986 में स्वीकृत किया गया और उसके बाद सभी राज्यों में लागू किया गया।

संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (1992)

शैक्षिक नीतियों एवं कार्यक्रमों को बनाने और उनके क्रियान्वयन में केन्द्र सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा वह कार्ययोजना शामिल है जिसे सन 1992 में किया गया। संशोधित नीति में एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली तैयार करने का प्रावधान है जिसके अंतर्गत शिक्षा में एकरूपता लाने
* प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को जनांदोलन बनाने।
* सभी को शिक्षा सुलभ कराने।
* बुनियादी प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखने।
* बालिका शिक्षा पर विशेष जोर देने।
* देश के प्रत्येक जिले में नवोदय विद्यालय जैसे आधुनिक विद्यालयों की स्थापना करने।
* माध्यमिक शिक्षा को व्यवसाय परक बनाने
* उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विविध प्रकार की जानकारी देने और अंतर अनुशासनिक अनुसंधान करने।
* राज्यों में नए मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना करने,
* अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद को सुदृढ़ करने खेल कूद, शारीरिक शिक्षा, योग को बढ़ावा देने एवं सक्षम मूल्यांकन प्रक्रिया अपनाने के प्रयास शामिल हैं।

* राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संशोधन से सम्बन्धित समितियां
* राममूर्ति समीक्षा समिति – 1990

* जनार्दन रेड्डी समिति – 1992
* यशपाल समिति – 1992 - 1993

Scanned with CamScanner

इसके मुख्य विचार
शिक्षा के उद्देश्य
* सामान्य स्कूल प्रणाली
2. बालकों का कार्य हेतु सशक्तीकरण
* स्कूल व कार्य स्थल में सम्बन्ध स्थापित करना
* परीक्षा सुधार
* मातृभाषा को स्थान
* स्त्रियों की शिक्षा
* धार्मिक अन्तरों को (शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में) कम करना)
* विद्यालय प्रशासन का विकेन्द्रीकरण

* ब्लैक बोर्ड योजना के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय में कम से कम 3 बड़े कमरे और 3 शिक्षकों की व्यवस्था की जाए, उसे उच्च प्राथमिक विद्यालयों में भी लागू किया जाए।

* प्राथमिक स्कूलों की नियुक्ति में शिक्षकों में 50% महिलाओं की भर्ती का प्रयास किया।

Scanned with CamScanner

①

UNIT – 2

Q. सेवाकालीन प्रशिक्षण से आप क्या समझते हैं? सेवाकालीन प्रशिक्षण पूर्व प्रशिक्षण से कैसे भिन्न है, अध्यापकों के लिए सेवाकालीन शिक्षा के कार्यक्रमों का वर्णन कीजिए। अपने राज्य में माध्यमिक स्तर पर स्कूल अध्यापकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण में सुधार के लिए अपने सुझाव दो

Ans सेवाकालीन प्रशिक्षण क्या है! – सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिगम की एक प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जा सकता है जहां से शिक्षक एक निश्चित स्तर का शिक्षक प्रशिक्षण पूर्ण कर लिया है उन्हें आगे शिक्षण में व्यक्तिगत विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए साधन प्रदान किए जाते हैं

सेवाकालीन का अर्थ :→ अध्ययन के निर्धारित विस्तारित पाठ्यक्रम तक व्यापक हो जाता है जो सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम को दर्शाता है और पेशेवर रूप से अक्षम शिक्षकों के लिए मान्यता प्राप्त योग्यता के उच्च स्तरों के लिए महत्वपूर्ण है।

सेवाकालीन प्रशिक्षण का अर्थ :→ राष्ट्रीय प्रशिक्षण नीति के लिए एक कार्य दल का गठन किया है जो प्रशिक्षण के उद्देश्यों की पहचान करने के अलावा ज्ञान और कौशल में संतुलन के लिए जहां कहीं व्यवहार में परिवर्तन की आवश्यकता है उसमें मदद करता है।

परिभाषाएँ :→
एम० बी० बुच के अनुसार " सेवाकालीन शिक्षा का अर्थ इस प्रकार सेवाकालीन शिक्षा उन क्रियाओं का कार्यक्रम है, जिनका उद्देश्य अध्यापकों तथा सेवारत शिक्षा कर्मचारियों की निरन्तर वृद्धि है।

(2)

एच. एस. एस. लॉरेंस :- सेवाकालीन वह शिक्षा है जो अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त करके शिक्षण व्यवसाय में प्रवेश करने के पश्चात प्राप्त करता है।

* पूर्व सेवाकालीन तथा सेवाकालीन शिक्षा में अन्तर

शिक्षा व्यवसाय में प्रवेश करने से पूर्व अध्यापक जो प्रशिक्षण प्राप्त करता है उसे पूर्व सेवाकालीन शिक्षा कहा जाता है। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद ही शिक्षा व्यवसाय को अपनाने के इच्छुक व्यक्ति शिक्षण कार्य के योग्य समझे जाते हैं इसलिए शिक्षा के प्रत्येक स्तर के अध्यापकों को शिक्षा कार्य में आने से पहले प्रशिक्षण प्राप्त करना होता है।

* सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्व :- शिक्षा एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। एक सुयोग्य, बुद्धिमान तथा सच्चा अध्यापक बनने के लिए उसे जीवन में विद्यार्थी ही बना रहना चाहिए उसे अपने ज्ञान में वृद्धि रहना चाहिए तथा इसमें नवीनता लाने का सदा प्रयास करते रहना चाहिए

* कोठारी आयोग के अनुसार :- शिक्षा के सभी क्षेत्रों में तेजी से उन्नति के कारण और अध्यापन के सिद्धांतों और प्रयोगों में निरन्तर हो रहे विकास के कारण सेवाकालीन शिक्षा की आवश्यकता बहुत ही अनिवार्य है।

* आलीवर के अनुसार :- प्रशिक्षण महाविद्यालय छोड़ने के पश्चात अध्यापक का विकास रुक नहीं जाता। अब वह विभिन्न प्रकार के अनुभव सीखना आरम्भ कर देता है

(3)

Page No.:
Date:

1 सेवाकालीन शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य है स्कूलों के कर्मचारियों की योग्यता में निरन्तर सुधार करना। अध्यापक को निरन्तर सीखते रहना चाहिए। टैगोर के शब्दों में, "एक दीपक दूसरे दीपक को तब तक प्रज्जवलित नहीं कर सकता जब तक कि वह स्वयं न जलता है।

2 नए अध्यापकों को सहायता प्रदान करने के लिए सेवाकालीन शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। उन्हें कई प्रश्नों के उत्तर की आवश्यकता है। सेवाकालीन शिक्षा से वे उन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर सकते हैं।

3 निरन्तर प्रशिक्षण के अभाव में शिक्षण का ज्ञान खड़े पानी के तालाब की तरह हो जाती है। निरन्तर प्रशिक्षण का अभाव शिक्षक के दृष्टिकोण को सीमित कर देता है जिसका छात्रों को कोई लाभ नहीं होता।

4 शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। अध्यापक को चाहिए कि शिक्षा इन परिवर्तनशीलता के साथ कदम से कदम मिला कर चले। यह तभी सम्भव है जब वे कि सेवारत शिक्षा को ग्रहण करता रहेगा। सेवारत शिक्षा शिक्षक को नया ज्ञान प्रदान करती है।

5 शिक्षकों तथा शिक्षा क्षेत्रों में काम करने वाले अन्य व्यक्तियों की कमियों को दूर करने के लिए सेवाकालीन शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। इससे शिक्षा के गुणात्मक विकास में सहयोग मिलेगा।

6 सेवापूर्व प्रशिक्षण को पूर्ण करने के लिए सेवाकालीन शिक्षा आवश्यक है। इससे अध्यापक का अपने विषय के साथ सजीव सम्पर्क रहता है।

Scanned with CamScanner

(4)

7 सेवाकालीन शिक्षा के सुनियोजित कार्यक्रमों में भाग लेने से अध्यापकों को दूसरे अध्यापकों से मिलने का अवसर प्राप्त होता है और अपनत्व की भावना उत्पन्न होती है। सेवाकालीन शिक्षा का अध्यापक तथा समुदाय के लिए बहुत महत्वपूर्ण

8 सेवारत शिक्षा अध्यापकों को शिक्षण की नई-2 विधि तथा कौशलों की जानकारी देने में बहुत अधिक सहायता प्रदान करती है। शिक्षण-प्रक्रिया और शिक्षा में नए-2 शोध हो रहे हैं। जिनका ज्ञान सभी अध्यापकों को होना चाहिए। यह कार्य सेवारत शिक्षा द्वारा ही हो सकता है।

9 विचार-विमर्श करना :→ सेवारत शिक्षा से विचारों का आदान-प्रदान किया जा सकता है। शिक्षण व्यवसाय में अध्यापक के सामने बहुत सी समस्याएँ आती हैं अपनी-2 समस्याओं का समाधान हो जाता है। एक ही व्यवसाय के लोग जब कोई अच्छा कार्य करते हैं। तो उनमें अपने व्यवसाय के प्रति अपनत्व, सहयोग एवं मैत्री की भावना उत्पन्न होती है।

10. पाठ्यक्रम में कुछ नए विषय जोड़ दिए जाते हैं जिन्हें अध्यापक को पढ़ाने में कठिनाई महसूस होती है परन्तु इस कठिनाई को सेवाकालीन शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा दूर किया जा सकता है।

11 शिक्षा को व्यवसायिक तथा उपयोगी बनाने के लिए नये-2 प्रयोग हो रहे हैं। इन प्रयोगों से उचित ढंग शिक्षा को व्यवसायिक तथा उपयोगी बनाने के लिए नये-2 प्रयोग हो रहे हैं जैसे 10+2 प्रणाली और कार्य-अनुभव को शिक्षा से जोड़ना इत्यादि

Scanned with CamScanner

(8)

12 शिक्षा के किसी भी विषय को लेकर सेवारत शिक्षा कार्यक्रमों में उसका आलोचनात्मक अध्ययन किया जाता है।

13 शिक्षक का मुख्य कार्य ही छात्रों को पढ़ाना है। प्रत्येक अध्यापक को आत्माभिव्यक्ति की कला में निपुण होना चाहिए।

सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम

1. सेमिनार :→ सेवाकालीन शिक्षा का एक प्रभावशाली साधन है। शिक्षा की विभिन्न समस्याओं पर कई सेमिनार आयोजित किए जाते हैं जैसे पाठ्यक्रम में सुधार तथा नवीन शिक्षण पद्धतियाँ आदि
(1) मैत्रीपूर्ण विचार - विमर्श के अवसर प्रदान करना
2 आत्म मूल्यांकन में सहायक
3. शीघ्र निर्णय करने में सहायक
4 कार्य के लिए जोश
5. शंकाओं का समाधान होता है

2 कार्यशाला :→ कार्य की शाला का अर्थ है शिक्षा के क्षेत्र में एक नया प्रयोग है। इन शालाओं में व्यवहारिक कार्य पर अधिक बल दिया जाता है इन कार्यशालाओं में भाग लेने वाले अध्यापकों को इनमें सक्रिय होकर काम करना पड़ता है। कार्यशालाओं का आयोजन

1. साहित्य निर्माण
2. नवीन मूल्यांकन विधियाँ
3. पुस्तकालय प्रबन्ध
4 पाठ्यक्रम निर्माण
5. पाठ योजना
6. शिल्प

Scanned with CamScanner

(6)

3 आभिनव कोर्स :→ अभिनव कोर्स का मुख्य कार्य शिक्षा के क्षेत्र में अनुसन्धान द्वारा हुए नवीन विचारों से परिचित करना है नवीन शिक्षण-विधियों, शिक्षा सम्बन्धी नवीन प्रयोगों, शिक्षण विषयों की नवीन गतिविधियों का परिचय देने के लिए अभिनव कोर्स की व्यवस्था की जाती है। शिक्षकों को अभिनव कोर्स के माध्यम से नए ज्ञान की जानकारी होती है

4 सम्मेलन :→ सम्मेलन अध्यापक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है यह सम्मेलन वार्षिक व अर्द्ध वार्षिक होना चाहिए। इन सम्मेलनों में शिक्षण सम्बन्धी किसी भी विषय को लेकर उसमें विचार किया जाता है पाठ्य-पुस्तकों का चुनाव नवीन शिक्षण विधियों तथा मूल्यांकन विधियों का प्रयोग, शिक्षालय प्रयोगों पर विचार करना तथा पिछड़े एवं मंद बुद्धि वाले बच्चों का मार्गदर्शन करना आदि

5 अध्ययन मण्डल :→ अध्यापन मण्डल के सदस्य समय-2 पर एकत्रित होकर सम्बन्धित समस्याओं पर विचार-विमर्श करते हैं तथा नवीन शिक्षण-विधियों का निर्माण करते हैं देश के विभिन्न स्तरों पर विषय अध्यापकों की सभाएं भी आयोजित होनी चाहिए। इससे शिक्षण मण्डल का स्तर ऊंचा होगा।

6 व्यवसायिक रचनाएं या लेखन, नवीन तथा विकास का परिचय प्राप्त करने के लिए शिक्षा विभागों तथा NCERT के द्वारा प्रकाशित पत्रिका तथा पुस्तकें प्रत्येक स्कूल के पुस्तकालय में उपलब्ध होनी चाहिए

7 स्कूल या प्रशिक्षण महाविद्यालय शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञों के भाषणों का प्रबन्ध कर सकते हैं

Scanned with CamScanner

8. पत्राचार कोर्स :→ आजकल शिक्षा का प्रचार बढ़ रहा अध्यापकों को सेवाकालीन शिक्षा प्रदान करने का यह उत्तम तरीका है पत्राचार कोर्स पाठ्यक्रम अधिकतर गर्मियों की छुट्टियों में होता है

* सेवाकालीन प्रशिक्षण में सुधार के लिए सुझाव

1. अधिकारियों की ओर से सेवाकालीन शिक्षा में भाग लेने वाले अध्यापकों को प्रोत्साहित किया जाए।
2. कोर्स में प्रवेश लेने के लिए छुट्टी मिलने की सुविधा उपलब्ध हो।
3. पदोन्नति तथा उच्चतम वेतनक्रम सेवा कालीन शिक्षा के आधार पर होना चाहिए
4. व्यावसायिक योग्यता में सुधार लाने के कारण अध्यापकों के वार्षिक बन्द कर देने चाहिए।
5. सेवारत शिक्षा से सम्बन्धित यदि कोई अध्यापक विदेश जाना जाता है तो उसे शिक्षात्मक अनुदान मिलना चाहिए।
6. सेवाकालीन शिक्षा के कार्यक्रमों का आयोजन किसी पहाड़ी स्थान पर होना चाहिए जिससे अध्यापकों को उसमें भाग लेने में रुचि उत्पन्न हो।
7. सेवाकालीन शिक्षा के कार्यक्रमों, उद्देश्यपूर्ण एवं प्रभावशाली बन सकें।

निष्कर्ष :→ अतः हम कह सकते हैं कि सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा इस आदर्श पर आधारित है कि वास्तविक अध्यापक जीवन भर स्थापित विद्यार्थी रहता है केवल वही व्यक्ति पढ़ा सकता है जो स्वयं जीवन भर सीखते रहने के लिए तैयार है। इस प्रकार शिक्षण व्यवसाय में प्रवेश कर चुके अध्यापकों को समय समय पर सुनियोजित कार्यक्रम द्वारा प्रशिक्षण देकर उनके ज्ञान में नवीनता प्रदान करना।

Scanned with CamScanner

UNIT-2 ①

Q बहु माध्यम क्या है? शैक्षिक तकनीकी में बहु माध्यम उपागम के उपयोगों की व्याख्या कीजिए।

Ans बहु माध्यम क्या है (मल्टीमीडिया)

अंग्रेजी के multi तथा media शब्दों से मिलकर बना है। multi का अर्थ 'बहु' या 'विविध' और media का अर्थ 'माध्यम'।

मल्टीमीडिया एक माध्यम होता है जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार की जानकारियों को विविध प्रकार के माध्यमों जैसे कि टैक्स्ट, आडियो, ग्राफिक्स, एनीमेशन, वीडियो आदि का संयोजन कर के दर्शकों/श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है।

आजकल मल्टीमीडिया का प्रयोग अनेक क्षेत्रों जैसे कि मल्टीमीडिया प्रस्तुतीकरण, मल्टीमीडिया गेम्स में बहुतायत के साथ होता है क्योंकि मल्टीमीडिया किसी वस्तु के प्रस्तुतीकरण का सर्वोत्तम साधन है।

शैक्षिक तकनीकी :→ तकनीकी प्रक्रियाओं और संसाधनों के सृजन, उपयोग तथा प्रबन्धन के द्वारा अधिगम और कार्य प्रदर्शन सुधार के अध्ययन और नैतिक अभ्यास को कहते हैं।

शैक्षिक तकनीकी शब्द के साथ प्रायः अनुदेशात्मक सिद्धान्त तथा अधिगम सिद्धान्त संबद्ध और शामिल होते हैं। जबकि अनुदेशी प्रौद्योगिकी में अधिगम एवं अनुदेश की प्रक्रियाएं तथा प्रणालियां शामिल हैं। शैक्षिक प्रौद्योगिकी में मानवीय क्षमताओं के विकास हेतु अन्य प्रणालियां शामिल होती हैं। शैक्षिक तकनीकी सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर और इंटरनेट अनुप्रयोगों तथा गतिविधियों का समावेश करती है किंतु इन तक सीमित नहीं है।

शैक्षिक तकनीकी का अर्थ :→ शैक्षिक तकनीकी मूल दो शब्दों से मिलकर बना है

Education Technology = Education + Technology

शिक्षण प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए जब हम शिक्षा में हार्डवेयर तकनीकी का प्रयोग करते हैं तो उसे हम तकनीकी कहते हैं।

कुछ लोगों ने शिक्षा के क्षेत्र में या कक्षाओं में ग्रामोफोन, रेडियो, टेपरिकार्डर, टेलीविजन, शिक्षण मशीन आदि का प्रयोग ही शैक्षिक टैक्नोलॉजी है इसे माना है लेकिन सिर्फ इतना कहना उचित नहीं है। बल्कि शैक्षिक तकनीकी का वास्तविक अर्थ है मानव अधिगम के प्रक्रम को सुधारने एवं उन्नत करने के लिए प्रणालियां, तकनीकी और सहायक उपकरणों का विकास प्रयोग एवं मूल्यांकन है।

* परिभाषा - रॉबर्ट ए. कोक्स : के अनुसार की सीखने की दशाओं में वैज्ञानिक प्रक्रिया के प्रयोग को शैक्षिक तकनीकी कहा जाता है"

* लूमर " शैक्षिक तकनीकी व्यवहारिक अधिगम की परिस्थितियों में वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग है"

* अनुदेशनात्मक विकास में बहुमाध्यम के प्रयोग की प्रक्रिया :→ शिक्षण एवं अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए बहुमाध्यम उपागम का उपयोग अनिवार्य है

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

* **विवरण तथा अर्थ :→** शैक्षिक तकनीकी को सर्वाधिक सरलता और सुगमता से प्रयोग किया जाता है जो विद्यार्थी को सीखने की प्रक्रिया में सहायक होती है। शैक्षिक तकनीकी शब्द एक व्यापक है मानव उपयोग की भौतिक सामग्री जैसे मशीनों या हार्डवेयर के रूप में की जाती है इसमें प्रणालियां संगठन की विधियां तथा तकनीकी आदि शामिल होते हैं कुछ आधुनिक उपकरण शामिल हैं लेकिन ये सिर्फ ओवरहेड प्रोजेक्टर, लैपटॉप, कंप्यूटर और कैलकुलेटर तक ही सीमित नहीं है। "स्मार्टफोन" और गेम जैसे नए उपकरण गंभीरता से अपनी अभिनव क्षमता की वजह से काफी ध्यान आकर्षित करने लगी हैं।

* **अनुदेशात्मक तकनीकी :→** समस्या आधारित अधिगम और पृच्छताछ आधारित अधिगम सक्रिय अधिगम शैक्षिक तकनीकी है जिसका उपयोग सीखने की सुविधा के लिए किया जाता है वह तकनीकी जिसमें भौतिक एवं प्रक्रिया प्रयुक्त विज्ञान शामिल है उस परियोजना, समस्या, पृच्छताछ-आधारित अधिगम के साथ सम्मिलित किया जा सकता है क्योंकि इन सब में एक समान शैक्षिक दर्शन है

शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र !→ शिक्षण, प्रशिक्षण तथा शिक्षा की लगभग सभी महत्वपूर्ण क्रियाओं से सम्बन्धित है जैसे अनुदेशात्मक उद्देश्यों को निर्धारित करना, अधिगम सम्बन्धी वातावरण की योजना बनाना, शिक्षण एवं अधिगम सामग्री को तैयार करना, शिक्षण हेतु उपयुक्त युक्तियों तथा अधिगम के माध्यमों का चयन करना एवं शिक्षण तथा अधिगम प्रणालियों का।

Scanned with CamScanner

1. अन्तिम व्यवहार को निर्धारित करना तथा उसे परिभाषित करना — विद्यालय में प्रवेश करने के बाद अध्यापक के लिए यह जानना आवश्यक है कि विद्यार्थी की योग्यता कितनी है जिससे वह उसका व्यवहार किस सीमा तक बदल सकता है इसलिए बहुमाध्यम का प्रयोग करके वह विद्यार्थी के अन्तिम व्यवहार को निर्धारित कर लेता है

2. पाठ्यवस्तु तथा व्यूह रचना का प्रयोग → पाठ्यवस्तु वह माध्यम है जो शिक्षक तथा अधिगमकर्ता के मध्य अन्तःक्रिया के लिए हस्तक्षेप करती है

3. शिक्षण विधि → शिक्षा में नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग करके अधिगमकर्ता को शिक्षण किया जाता है शिक्षण विधियों में बहुमाध्यम का प्रयोग क्यों कब और कौन किया जाए।

4. मूल्यांकन करना → जिससे विद्यार्थी के व्यवहार में क्या परिवर्तन हुए उसकी जानकारी प्रदान करने में सहायक है विभिन्न बहुमाध्यम प्रविधि के प्रयोग से मूल्यांकन आसान हो जाता है

5. निदानात्मक निर्णय के आधार पर सुधारात्मक अनुदेशन विद्यार्थी की योग्यता, रुचि, ज्ञान अथवा उसकी अन्तर्निहित शक्तियों की जानकारी प्राप्त करके, अध्यापक सुधारात्मक अनुदेशन प्रदान करता है इसमें बहुमाध्यम प्रविधि का प्रयोग सहायक है

A भारत वर्ष में (N.C.E.R.T) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद, ने बहुमाध्यम उपागम का प्रयोग किया। प्रयोग में दूरदर्शन रेडियो का प्रयोग सेवारत शिक्षकों के लिए किया है

Scanned with CamScanner

सिद्धान्त ! → कक्षा शिक्षण में शैक्षिक माध्यम के रूप में प्रयोग करने

1. उद्देश्यों को ध्यान में रखकर चयन करना।
2. कक्षा में तत्परता लाने के लिए माध्यम का चयन
3. शैक्षिक परिस्थितियों के लिए तैयारी।
4. विद्यार्थी अनुक्रिया सफल बनाने के लिए निर्देशन।
5. माध्यम की प्रभावशीलता की जानकारी प्राप्त करने के लिए लगातार मुल्यांकन करना।

उपग्रह दूरदर्शन के उद्देश्य व विशेषताएँ

1. शैक्षिक तकनीकी वैज्ञानिक ज्ञान के उपयोग पर आधारित है।
2. यह तकनीकी निरंतर गतिशील होती है।
3. विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाना।
4. तकनीकी में मनोविज्ञान, विज्ञान तकनीकी प्रणाली, कला, दृश्य श्रव्य सामग्री व मशीनों का प्रयोग
5. शिक्षण प्रक्रिया को वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ, सरल, स्पष्ट एवं रुचिकर बनाने के लिए शैक्षिक तकनीकी सहायक सिद्ध हुई है।
6. अभिक्रमित अधिगम, अन्तः क्रिया विश्लेषण, दृश्य श्रव्य सामग्री, सूक्ष्म शिक्षण आदि नई खोजों के विकास में शैक्षिक तकनीकी का सक्रिय प्रयोग है।
7. शैक्षिक तकनीकी वातावरण पर नियन्त्रण करती है जिससे सीखने को प्रोत्साहन मिलता है।
8. सीखने के परिणामों की जांच के लिए मापक यंत्रों की व्यवस्था पर बल दिया जाता है।
9. सीखने की विधियों पर अधिक बल देना ताकि अधिगम को प्रभावशाली बनाया जा सके।
10. कक्षा प्रबन्धन एवं नियन्त्रण को प्रभावशाली बनाने में शैक्षिक तकनीकी सहायक सिद्ध हुई है।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

①

UNIT-2

Q विद्यालयों के परिवीक्षण तथा मूल्यांकन का वर्णन करें।

Ans परिवीक्षण अध्ययन का शाब्दिक अर्थ है कि शिक्षक के परिवीक्षण में विद्यार्थी द्वारा किया जाने वाला अध्ययन का स्वाध्याय द्वारा समाजीकृत अभिव्यक्ति भी कहा जाता है। परिवीक्षण नवीन संकल्पना के अनुसार शिक्षक अधिकार भावना से निर्देश देने तथा आलोचना की दृष्टि से करने के स्थान पर छात्रों का पथ प्रदर्शन एवं उनकी कठिनाईयों का समाधान करता है। इस विधि में विद्यार्थी अपने आवंटित कार्य को शिक्षक की देखरेख में स्वतंत्र रूप से करते हैं। शिक्षक वहीं उनके कार्य का निरीक्षण व निर्देशन करता है।

परिवीक्षण प्रणाली का प्राचीन शिक्षा में विशेष महत्व रहा है। शिक्षा नीति (1986) में भी परिवीक्षण शब्द का उपयोग किया है। शिक्षा नीति के अनुसार राष्ट्र तथा राज्य स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में कार्यक्रमों, नीतियों तथा शोध कार्यों में किया है।

परिवीक्षण का अर्थ निरीक्षण से भिन्न है। मॉनीटर कम्प्यूटर के उपकरण में होता है जो भी कार्यक्रम किया जाता है मॉनीटर पर उसको देखा जा सकता है। कार्यक्रम की गतिविधि का साथ अवलोकन करना तथा त्रुटि में सुधार करना। परिवीक्षण की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है।

परिभाषाएँ। → बाइनिंग तथा बाइनिंग "परिवीक्षित अध्ययन विधि से हमारा अर्थ है शिक्षक द्वारा कक्षा तथा छात्रों के एक वर्ग का उस समय परिवीक्षण किया जाना जबकि वे अपनी डेस्कों या मेजों पर कार्यरत होते हैं।"

(2)

* वैसले " समाजीकृत अभिव्यक्ति बहुधा शिक्षण की एक विधि कही जाती है किन्तु यह वास्तव में एक आदर्श है, विधि नहीं।

* कलार्क तथा स्टार - परिवीक्षित अध्ययन कालांश छात्रों को दिये गये निर्देशन के अन्तर्गत कार्य करने तथा शिक्षक को पर्यवेक्षण एवं निर्देशन का अवसर देता है।

* परिवीक्षण की विशेषताएं :→

1. परिवीक्षण में गहनता होती है क्योंकि इसमें निदान के साथ - 2 उपचार भी किया जाता है।
2. परिवीक्षण का लक्ष्य कार्यक्रमों का नियंत्रण करना और उनमें सुधार करना होता है।
3. परिवीक्षण में कार्यक्रमों का सम्पादन अपेक्षित दिशा में किया जा रहा है, अथवा नहीं, इसका निदान करके साथ -2 मार्गदर्शन भी किया जाता है।
4. परिवीक्षण की प्रक्रिया में आकलन निदान हेतु किया जाता है ताकि कमजोरियों का साथ-2 उपचार किया जा सके।
5. परिवीक्षण में निपुणता के साथ आकलन, निदान हेतु किया जाता है और उसके लिए उपचारात्मक साधन उपलब्ध कराये जाते हैं।
6. इस पद्धति में सीखने का महान गुण है।
7. इसमें शिक्षक की मुख्य भूमिका छात्रों की सहायता करना उन्हें अध्ययन के लिए निर्देशन देना।

इस पद्धति के अन्तर्गत शिक्षक एवं छात्रों के मध्य मधुर सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

Scanned with CamScanner

पर्यवेक्षित अध्ययन विधि का महत्व

1. पर्यवेक्षित अध्ययन विधि के द्वारा पिछड़े हुए छात्रों को शिक्षा उपयुक्त ढंग से दी जाती है।

2. पर्यवेक्षण अध्ययन विधि में छात्र की योग्यताओं और क्षमताओं को विकसित करने का सु-अवसर प्राप्त होता है

3. यह विधि स्व-क्रिया पर आधारित है। शिक्षक के निर्देशन में छात्र स्वयं कार्य करते है।

4. पर्यवेक्षण अध्ययन का अन्तिम लक्ष्य पाठ्यवस्तु का स्वामित्व कराना होता है।

5. इस अध्ययन में छात्रों की पाठ्यवस्तु की ग्राह्यता का विकास कराता है।

6. इस पद्धति का आधार वैयक्तिक भिन्नता है।

7. हिन्दी शिक्षण में इसके द्वारा छात्रों में मौन वाचन की अच्छी आदत डाली जा सकती है।

8. शिक्षक द्वारा छात्र इस विधि में अधिक क्रियाशील रहते है।

9. आंबटन कार्य छात्र की योग्यता, रुचि, क्षमता के अनुसार दिया जाता है।

10. छात्रों को पुस्तकालय - वाचनालय, प्रयोगशालाओं तथा क्षेत्र में कार्य करने का मौका मिलता है। इसमें छात्रों को गृह कार्य भी दिये जाते है।

11. यह विधि प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के बालकों के लिए उपयुक्त नहीं है यह उच्च कक्षाओं के लिए ही उपयुक्त है।

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन :→ किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में किसी भी एक पक्ष के विषय में सूचना एकत्र करना उसका विश्लेषण और व्याख्या है जो इस की प्रभावित, कुशलता अन्य परिणामों की परखने की मान्य प्रक्रिया का एक भाग है"।

मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी छात्र ने कितना ज्ञान प्राप्त किया है उसकी जानकारी प्राप्त की जाती है मूल्यांकन वह माध्यम है जिसके द्वारा निर्धारित करते हैं कि छात्र क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं"

मूल्यांकन का अर्थ :→ मूल्यांकन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह पढ़ाने में शिक्षक की तथा सीखने में विद्यार्थियों की मदद करता है। मूल्यांकन अध्यापन - अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है।

मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके आधार पर हम किसी छात्र के ज्ञान का आकलन करते हैं

परिभाषा

* कोठारी कमीशन के अनुसार "मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है, यह सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग है। और शिक्षा लक्ष्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है"

क्विलन एवं हाना — मूल्यांकन ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा स्कूल में प्रगति करते हुए विद्यार्थियों के व्यावहारिक परिवर्तन के साक्ष्यों को एकत्रित करके उनकी व्याख्या की जाती है।"

रेमर्स एवं गेज :- "मूल्यांकन के अन्दर व्यक्ति या समाज अथवा दोनों की दृष्टि में जो उत्तम है अथवा वांछनीय है, उसको मानकर चला जाता है"

Scanned with CamScanner

(5)

Page No.:
Date:

विद्यालय का मूल्यांकन :→

1. यह पारम्परिक प्रणाली से अधिक विस्तृत, अधिक व्यापक और सतत होता है।
2. मुख्य लक्ष्य विकास की ओर उन्मुख होता है।
3. यह मूल्यांकन बाल केन्द्रित के अलावा विद्यालय केन्द्र भी है।
4. यह मूल्यांकन बहुआयामी होता है।
5. विद्यालय के मूल्यांकन से शिक्षक के निष्पादन का भी बोध होता है और छात्रों तथा शिक्षकों को एक पृष्ठ-पोषण मिलता है।
6. मूल्यांकन में शिक्षकों की प्रभावशीलता छात्रों की उपलब्धियों को ही प्राथमिकता दी जाती है।
7. एक प्राचार्य को चाहिए कि विद्यालय के आकलन में उसकी प्रगति, प्रोन्नति, क्षमताओं तथा कठिनाइयों को महत्व दिया जाये।
8. विद्यालय शिक्षा के अन्तर्गत मासिक परीक्षाएँ या साप्ताहिक परीक्षाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे छात्रों के अध्ययन में निरन्तरता रहती है।
9. छात्रों की प्रगति का संचयी आलेख भी तैयार किया जाना चाहिए जिससे छात्रों को भी प्रगति का बोध होवे।
10. प्राचार्य को स्वयं भी अपनी कार्यप्रणाली का आकलन करना चाहिए।

निष्कर्ष :→ मूल्यांकन द्वारा किसी भी संस्था का संचालन करने में कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति कहां तक हो सकती है, अतः विद्यालय के मूल्यांकन की विद्यालय की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

Scanned with CamScanner